रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–71, अंक : 21, 28/31 अगस्त 2014 तदनुसार 15 भाद्रपद सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पूर्ववर्ती श्रेष्ठ का अनुसरण

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्विता च सत्ता स्वधया च शंभुः।
तस्यानु धर्म प्र यजा चिकित्वोऽथा नो धा अध्वरं देववीतौ।।

–ऋ. 3/17/5

शब्दार्थः हे **अग्ने**= ज्ञानिन्। **यः** =जो **होता**= होता **त्वत्**= तुझसे **पूर्व**= पूर्व और **यजीयान्**= अधिक याज्ञिक है **च**= और **द्विता**= दो प्रकार से **सत्ता**= स्थिति वाला **च**= और **स्वध्या**= अपनी शक्ति से, स्वभाव से **शम्भुः**= कल्याणस्वरूप है, हे **चिकित्वः**= समझदार। **तस्य**= उसके **अनु**= अनुसार **धर्म**= धर्म का, कर्त्तव्य का **प्र+यज**= उत्तम रीति से पालन कर **अथ**= और **नः**= हमारे **अध्वरम्**= यज्ञ को, हिंसारहित व्यवहार को, मार्ग प्रदर्शन कार्य को **देववीतौ**= देवकामना के निमित्त **धाः**= धारण कर।

व्याख्या= आज संसार में बुद्धिवाद का शोर है। सभी कहते हैं हम अपनी बुद्धि के पीछे चलते हैं। कहते तो सभी ठीक हैं, किन्तु उसमें थोड़ा सा विचारने की आवश्यकता है। बुद्धि बालक में भी होती है। उसे अनुकरण करना पड़ता है, माता, पिता, भ्राता, स्वसा आदि का। जैसे वे चलते हैं, वैसे वह चलने का यत्न करता है। जैसा वे बोलते हैं, वैसा वह भी बोलता है। बुद्धि का प्रयोग वह भी करता है, क्योंकि बुद्धि के बिना अनुकरण संभव ही नहीं। कहावत है, **नकल के लिये भी अकल चाहिये।** एक महाविद्वान को ले-लो। बड़ा ज्ञानी है, तत्त्वदर्शन, भौतिक विज्ञान, रसायन, गणित आदि का महापण्डित है। क्या उसे यह सब कुछ अनुकरण किये बिना आ गया है? अरे। उसके पास बहुत कुछ दूसरों का है, अपना थोड़ा है। सार यह कि संसार में अनुकरण करना पड़ता है। वेद अनुकरण की एक शर्त बताता है– **यस्त्वद्धोता पूर्वो यजीयान्** जो होता तुझ से पूर्व और अधिक याज्ञिक हो, उसका अनुकरण करो।

जिसका अनुकरण करेंगे उसके समकालीन होने पर उसका अनुकर्त्तव्य कर्म तो हमसे पूर्व विद्यमान है और साथ ही वह हमसे अधिक गुणवान हैं। कोई मनुष्य अपने समान गुण कर्म वाले का अनुकरण नहीं करता जिसका अनुकरण करने लगे हों, यह अधिक याज्ञिक हो। यज्ञ परोपकार कर्म को कहते हैं। ऐसा मनुष्य स्वभाव से शंभु= कल्याणस्वरूप होना चाहिये। अन्यथा उसका परोपकार प्रहार का रूप धारण कर लेगा। गुरूकुल से शिष्य को विसृष्ट (विदा) करते समय गुरु कहा करते थे–

अथ यदि ते कर्मविचित्सा वा वृत्तविचित्सा वा स्यात्।
ये तत्र ब्राह्मणा= सम्मर्शिनः, युक्ता आयुक्ताः अलूक्षा धर्मकामाः,
स्युः, यथा ते तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र वर्त्तेथाः।। –तैत्तिरीयो 1/11

यदि तुझे कभी अपने किसी कार्य की युक्तता में संदेश हो जाये अथवा आचार के औचित्य में संशय हो जाये तो देख वहां जो कोई सब को एक समान देखने वाले, धर्मयुक्त, पापरहित, मधुर स्वभाववाले, धर्माभिलाषी, ब्रह्मनिष्ठ मनुष्य हों, जैसा वे करें, वैसा तू करना।

अनुकरणीय पुरुषों के गुण संक्षेप में बड़े सुन्दर रूप से सुझा दिये हैं। प्रकृत मंत्र के पूर्वार्ध की व्याख्या यही है–लोभी, लालची, कठोर स्वभाव, अधार्मिक, भेदबुद्धिवाला अनुकरण के योग्य नहीं है। इस मंत्र के अंत में यज्ञ का उद्देश्य भी थोड़े से शब्दों में कहा है– **अथा नो धा अध्वरं देववीतौ** और हमारे अध्वर को दिव्य कामनाओं के निमित्त धारण कर।

सर्वथा कामनारहित होना असंभव है जैसा कि मनु महाराज कहते हैं:–

कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्तयकामता।
काम्यो हि वेदाधिगमो कर्मयोगश्च वैदिकः।। **–मनु 2/2**

कामनाओं से आक्रान्त रहना अच्छा नहीं है और न ही इस संसार में कामना रहित होना संभव है क्योंकि वेदाध्ययन तथा वैदिक कर्मयोग कामना करने की वस्तु है।

यज्ञ कर्मयोग है, वैदिक है, अतः यह कामना का विषय है, किन्तु यह किस कामना को लक्ष्य करके किया जाये? वेद स्वयं इसका उत्तर देता है–

अथा नो धा अध्वरं देववीतो हमारे अध्वर को दिव्य कामना के निमित्त अथवा देव भगवान की कामना के निमित्त धारण करो। भगवान की कामना तब होती है जब संसार की सब कामनाएं मिट जाएं, जैसा मुण्डक ऋषि ने कहा है:–

उपासते पुरुषं ये ह्यकामास्ते शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः।
कामान् यः कामयते मन्यमानः स कामभिर्जायते तत्र तत्र।
पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः।।

–मुण्डः 3/2/1,2

जो लौकिक कामनाओं को त्यागकर परमपुरुष की उपासना करते हैं वे ध्यानी इस संसार से तर जाते हैं। जो लौकिक कामनाओं को ही सब कुछ मानता हुआ कामनाएं करता रहता है, उन कामनाओं के कारण उसका बार बार जन्म होता है। जिसकी सब कामनाएं पूरी हो चुकी हैं, वह कृतार्थ है, सफल है, उसकी सभी कामनाएं इसी जन्म में मिट जाती हैं।

बार बार जन्मना, मातृगर्भ की अंधेरी कुटिया में कैद होना, नाना क्लेश सहना। कामना छोड़ संसार से मुख मोड़ जगत् से नेह–नाता तोड़, भगवान से सम्बन्ध जोड़ फिर से सब बंधन कट जाएंगे।

–स्वाध्याय संदोह से साभार

महर्षि का वेद–भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है

–ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स 180 महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला) कोलकत्ता

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ० सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित ''यजुर्वेद सन्देश'' पुस्तिक से उद्धृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान हैं। सभी आर्य जन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुड़े हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व० पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में ''आदर्श आर्य प्रवर'' शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ० साहब ने ही किया था, जिसकी सभी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उद्घाटन के समय सोमदेव जी मेरे गाँव देवराला (हरियाणा) भी गये थे। मेरे पूरे परिवार से इनका घनिष्ट सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी इन्होंने कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक ''यजुर्वेद सन्देश'' को पढ़ने से इनकी प्रकाण्ड विद्वता का परिचय मिल जाता है। इस पुस्तक के पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेद-भाष्य, अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक और सही है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर ख़रा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्म काण्ड को ही मानते थे। परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्म काण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव-मात्र का बड़ा उपकार व कल्याण किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो लेख लिखा है, इसे पढ़ कर मैं आशा करता हूँ कि सुधि पाठक गण वेदों के सही स्वरूप को समझ पायेंगे। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इसी भाँति है।

१. मध्यकालीन वेद भाष्यकार:- मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रमी संवत 687 में एकन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4-5 सूक्तों का आधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। सकन्द स्वामी के समय ही ''उद्गीथ'' हुए हैं, उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पांचवें सूक्त के चौथे मन्त्र से 86 सूक्त के 6 मन्त्र तक वेद भाष्य किया। यह भाष्य भी कर्मकाण्ड परक ही है। विक्रम संवत् की 12वीं शताब्दी में बेंकट माधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के 164 सूक्त) का आध्यात्मिक प्रकियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् 1255-1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणा चार्य (विक्रम संवत 1372-1442) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बाल खिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं-कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किये हैं।

उव्वट (विक्रम संवत्, 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्मकाण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत् 1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य यज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा/गोमेध, अश्वमेधादि शब्द का अनर्थ करके पशु हिंसा जैसे जघन्य कृत्य को यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य यह भास्कर ने विक्रम संवत् 1100 में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 के लगभग किया, कर्म काण्ड परक अर्थों के साथ-साथ कहीं-कहीं अध्यात्म परक अर्थ भी किये। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक्त कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्धृत किये। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया। अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मन्त्र-तन्त्र, जादू-टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्मकाण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशु हिंसा, मांस भक्षण, जादू-टोना, मारण-उच्चाटन, अग्नि-इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख, ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हवि (आहूति) का भक्षण करने के किए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया।

जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल कुछ व्यक्ति (विशेष ब्राह्मणों) के लिये ही हैं जो याज्ञिक कर्म काण्ड कराते हैं, इसी प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिए ही उपयोगी हैं। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रूचि हट गई। वेद कथा, वेद प्रवचन प्रचारादि के स्थान पर भागवत-गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि प्रचलित हो गये।

पाश्चात्य विद्वान् :-आधुनिक युग (18वीं 19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डॉ० एच-एच विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। प्रो० मैक्समूलर ने रूद्र, मारूत्, वायुआदि देवताओं के सूक्तों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादन का भी परिश्रम साध्य कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान् ग्रासमान ने सन् 1876-1877 में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान् ए. लुडविग, एच. ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर. टी. एच ग्रिफिथ ने (सन् 1881-1898) चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया। लंगल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान् ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ० कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् 1848 में) सामवेद कौथुम शाखा का जर्मन अनुवाद किया। अथर्ववेद (शौनक-संहिता) का W.H.....ने तथा अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों से बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्द:-महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार-प्रसार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन करना, शंका समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न-बाधाओं का सहन करना, दिन-रात प्रचार यात्रा करना, छोटे-बड़े 43 ग्रन्थों को लिखना, अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख व्यक्तियों ने उन पर ईंट-पत्थर फैंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगाई, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फेंका आदि दुष्कृत्य किये किन्तु गुरू भक्त एवं प्रभु विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं हुए और गुरू को दिया वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उव्वट और महीधर ने गोमेध, अश्वमेध नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के 7 से 22 वे मन्त्र तक पशु को बांधना, देवता के लिये उसका वध करना, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है। साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिये की गयी हिंसा हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गये। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर यज्ञों में हिंसा का घोर विरोध किया। उन्होंने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में ''पशु न पाहि'' पशुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को ''अघ्न्या'' अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गोमेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं, अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखता है, अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद-भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्त्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

सम्पादकीय.....

मनुर्भव (मनुष्य बन)

संसार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद हमें जीवन निर्माण के लिए एक आदेश देता है कि मनुर्भव तू विचारशील मनुष्य बन। वेद मनुष्य को मनुष्य बना हुआ देखना चाहता है। वेद में यह नहीं कहा कि ईसाई बन, मुसलमान बन। वेद तो वास्तविक मानव बनने पर बल देता है। अपने को फरिश्ता या पैगम्बर बना लेना उतना कठिन नहीं जितना इन्सान बनना। मनुष्य की परिभाषा यास्क मुनि जी ने इस प्रकार की है- मत्वा कर्माणि सीव्यति जो विचारपूर्वक कर्म करता है वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है।

ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के स्वमन्तव्यामन्तव्य में मनुष्य की परिभाषा इस प्रकार से की है कि- मनुष्य को सबसे यथा योग्य स्वाात्मवत्, सुख-दुख, हानि-लाभ में वर्तना श्रेष्ठ, अन्यथा वर्तना बुरा समझता हूं। आज सचमुच दुनिया में बड़े से बड़े डॉक्टर, इन्जीनियर, व्यापारी, अमीर, अफसर मिल जाएंगे परन्तु ऐसे बहुत ही कम देखने को मिलेंगे जिनके अन्दर मनुष्यत्व की भावना होगी। आज बड़े से बड़े पद पर आसीन व्यक्ति गलत काम कर रहे हैं। अगर व्यक्ति के अन्दर मनुष्यत्व की , इन्सानियत की भावना आ जाए तो वह मनुष्य किसी का अहित नहीं करता, किसी को हानि नहीं पहुंचाता। ऐसा व्यक्ति उच्च पद को प्राप्त करके अपने राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य के महत्व को समझता है। मनुष्यत्व की भावना आ जाने से मनुष्य में श्रेष्ठ गुणों का समावेश होता है। वह व्यक्ति अपने परिवार तक ही सीमित नहीं रहता है बल्कि सारी पृथ्वी उसके लिए अपना परिवार बन जाती है। आज संसार में बड़ी से बड़ी डिग्री प्राप्त करना आसान है परन्तु मनुष्यत्व की भावना को धारण करना कठिन है। इसीलिए तो किसी शायर ने कहा है-

फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज्यादा।।

यूनान देश की एक गाथा है कि एक दार्शनिक दोपहर के बारह बजे हाथ में लैम्प लेकर बाजार में घूम रहा था। लोग आश्चर्य में थे कि इसको क्या हो गया। लोगों ने उससे पूछा कि आप इस दोपहरी में लालटेन लिए क्यों घूम रहे हो? तो उसने उत्तर दिया कि मैं मनुष्य ढूंढ रहा हूं। लोगों ने कहा क्या हम मनुष्य नहीं हैं? तो उस दार्शनिक ने कहा कि आकृति से तो सभी मनुष्य लग रहे हो परन्तु मनुष्य के अन्दर जो दया, नम्रता, सहानुभूति, एक दूसरे के सुख-दुख को समझने की भावना होनी चाहिए आज वो भावना कहीं भी दिखाई नहीं दे रही है। ऐसे मनुष्य और पशु में कोई फर्क नहीं होता। वास्तव में मनुष्य एक दर्जी के समान है जो विचारपूर्वक कर्म करते हुए अपने जीवन में कर्मों को सीए। जो व्यक्ति विचारपूर्वक कर्म नहीं करता और अपने भले और बुरे की पहचान नहीं करता वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी हो ही नहीं सकता। मनुष्य जन्म को प्राप्त करके उसे इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि मेरा इस संसार में आने का क्या प्रयोजन है? मैं यहां क्या करने आया था और क्या कर रहा हूं। इस जीवन का उद्देश्य क्या है? मनुष्य को प्रतिदिन अपने जीवन का निरीक्षण करना चाहिए कि मैं पशुओं की तरह जीवन व्यतीत कर रहा हूं या मनुष्यों की तरह। मनुष्य और पशु में बहुत अन्तर है। पशु तो केवल उसको कहते हैं जो केवल देखता है। परन्तु मनुष्य को तो परमात्मा ने पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां मन तथा बुद्धि दी है। इसलिए कि वह इनसे जहां ज्ञान प्राप्त करें वहां अच्छे कर्म भी करें और अपनी बुद्धि विवेक के द्वारा अपने कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, लाभ-हानि, सुख-दुख का चिन्तन करें। मनुष्य आज अपने कर्त्तव्य का पालन करें तो राष्ट्र को बुराईयों से रहित किया जा सकता। माननीय प्रधानमन्त्री श्री मोदी जी के अनुसार जब तक मनुष्य मैं क्या, मेरा क्या की भावना का त्याग नहीं करेगा, तब तक राष्ट्र की उन्नति सम्भव नहीं है। अगर प्रत्येक मनुष्य अपना और अपने परिवार का सुधार कर दे तो सम्पूर्ण राष्ट्र का सुधार हो सकता है। बुराईयां तभी फैलती है जब मनुष्य इनकी ओर ध्यान नहीं देता। जैसे शरीर के अन्दर बीमारी पैदा होने पर ठीक समय पर उसका उपचार न होने से वह बीमारी असाध्य हो जाती है और सम्पूर्ण शरीर में फैल जाती है उसी प्रकार जब प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, बुराईयों को दूर करने का प्रयास करता है तो वह बुराई समाप्त हो जाती है। इन्सान के अन्दर जब इन्सानियत की भावना आ जाती है तो वह दूसरों की बेटी को अपनी बेटी के समान समझता है, पराए धन की लालसा नहीं रखता है, किसी का अहित नहीं करता है, किसी को हानि नहीं पहुंचाता है,उसकी दृष्टि शुद्ध और पवित्र होती है। किसी कवि ने बहुत सुन्दर पंक्तियां लिखी हैं कि- आओ मिल के विचार करें, पहले हम आप सुधरे फिर जग का सुधार करें। किसी भी सुधार के कार्य की शुरूआत अपने आप से होती है। जो स्वयं दुराचारी है, भ्रष्टाचारी है, वह अगर दूसरों को इनसे दूर रहने की शिक्षा दे तो वह हंसी का पात्र बनता है। हम अपने महापुरूषों के जीवन को देखें उसका अध्ययन करें कि उन्होंने कितनी कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया। ऐसे महापुरूषों के जीवन मनुष्य के लिए प्रेरणा स्तम्भ होते हैं, दीपक के समान प्रकाश देने वाले होते हैं जिनसे प्रकाश पाकर मनुष्य अपने अन्धेरे जीवन को प्रकाशित करता है। ऐसे महापुरूषों के जीवन पथ पर चलने से ही व्यक्ति मनुष्य बनता है। आज संसार में बहुत से मत, सम्प्रदाय फैले हुए हैं जो लोगों को अपनी-अपनी ओर खींचना चाहते हैं, कोई ईसाई बनाना चाहता है, कोई बौद्ध बनाना चाहता है, कोई मुसलमान बनाना चाहता है, कोई जैनी बनाना चाहता है। हर कोई सम्प्रदाय अपने-अपने सम्प्रदाय का विस्तार करना चाहता है जिसे उनके द्वारा धर्म का नाम दिया जाता है। परन्तु कोई भी वेद के सन्देश की तरह मनुष्य बनाने का प्रयास नहीं करता। अगर सभी मत, पन्थ और सम्प्रदाय की भावना को भूलकर मनुष्यत्व को अपनाने की इन्सानियत को धारण करने की शिक्षा दें तो सभी झगड़े और बुराईयां समाप्त हो सकती हैं। वेद का सन्देश हमें मत और सम्प्रदाय से दूर रहकर मनुष्य बनने की शिक्षा देता है। वेद की शिक्षाएं सार्वभौमिक हैं जो किसी एक के लिए न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के लिए हैं। इसलिए अगर हम वास्तव में मनुष्यत्व का प्रचार करना चाहते हैं तो हमें वेद के इस मनुर्भव(मनुष्य बनों) के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाना होगा।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

वेद प्रचार पखवाड़ा

आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर की ओर से ऋषि मुनियों के द्वारा प्रदत्त वेद के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने के लक्ष्य से वेद प्रचार पखवाड़े का आयोजन 31 अगस्त 2014 से 14 सितम्बर 2014 तक किया गया है। श्रावणी उपाकर्म का यह महान् पर्व भिन्न-भिन्न परिवारों की ओर से आर्य समाज मन्दिर में आयोजित किया गया है। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के विद्वान् आचार्य राजू जी वैज्ञानिक के प्रवचन तथा श्रीमती रश्मि घई तथा सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन जी के मधुर भजन होंगे। स्वाध्याय एवं सत्संग से कुरीतियां व बुराईयां दूर होकर विचार शुद्ध होते हैं। अत: आप सभी से प्रार्थना है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रम में उपस्थित होकर जीवन को सफल करें। सत्संग का समय प्रात: 6:30 से 8:00 बजे तथा सायंकाल को 5:00 से 7:00 बजे तक रहेगा। सायंकाल के कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज मन्दिर में अलग-अलग परिवारों की ओर से आयोजित किया जाएगा। **-अजय महाजन मन्त्री आर्य समाज**

वैदिक जीवन पद्धति श्रेष्ठ व सर्वोत्तम

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

(गतांक से आगे)

दूसरा आश्रम गृहस्थ आश्रम कहलाता है जिसमें विवाह करके सन्तानवान होना, अपने वर्णाश्रम के अनुसार कर्म व व्यवसाय करते हुए अपनी सन्तानों को शिक्षित व संस्कारित करना व सन्ध्याग्निहोत्र आदि पांच यज्ञों को करते हुए अपने सभी सामाजिक दायित्वों का भली प्रकार निर्वाह करना है। 50 से 75 वर्षों तक की आयु में गृहस्थ को छोड़कर वानप्रस्थी बनना और जिसके पास जो योग्यता है उसके अनुसार किसी गुरूकुल में अध्यापन कराना वा नि:शुल्क सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों को करना एवं अपना ज्ञान, योग्यता व अभ्यास को बढ़ाते रहना। संन्यास आश्रम 75 वर्ष से आरम्भ होता है जिसमें शेष आयु अपने परिवार से सम्बन्ध समाप्त कर ईश्वर का ध्यान-समाधि में बिताना व देश-देशान्तर में वैदिक सत्य व वैज्ञानिक मत का प्रचार करना जिससे कहीं अज्ञान का अंधकार स्थान प्राप्त न कर सके।

वैदिक जीवन में रात्रि 10 बजे तक सोने व प्रात: 4 बजे या कुछ पूर्व निद्रा त्याग कर, उठ कर, कुछ काल ईश्वर का ध्यान कर पश्चात् शुद्ध वायु में भ्रमण करना, व्यायाम करना, स्नानादि कर शुद्ध होना व प्रतिदिन सन्ध्या व अग्निहोत्र का सम्पादन करना होता है। जितना सम्भव हो वेद व वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन व स्वाध्याय करना तथा समय मिलने पर वैदिक मान्यताओं का अपने आस-पास के लोगों में प्रचार करना। इसी प्रकार अपना व्यवसाय करते हुए, माता-पिता की सेवा के रूप में पितृ यज्ञ करना, विद्वान अतिथियों की सेवा-सुश्रुषा तथा पशु-पक्षियों को जो भोजन व चारा आदि खिला सकते हैं उससे बलिवैश्वदेव यज्ञ करना। इसी प्रकार सायं सूर्यास्त के समय अग्निहोत्र, सन्ध्या आदि करना और भोजन आदि करके स्वाध्याय करना तथा रात्रि 10 बजे तक शयन करना। यह ध्यान रखना की सत्य का धारण व पालन ही धर्म है, सत्य पर अडिग रहना। सत्य का पालन करने वालों को ईश्वर की सहायता व आलम्बन प्राप्त रहता है, यह जान कर उत्साहित रहना। असहायों के प्रति दया व करूणा की भावना रखना व उनकी सेवा, सहायता व दान आदि कार्यों का करना। स्वाध्याय के लिए जहां अनेक ग्रन्थ हैं, वहां प्रमुख रूप से सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कार विधि व आर्याभिविनय भी है। इसके साथ चारों वेद, उपनिषद, दर्शन ग्रन्थ, मनुस्मृति, महाभारत व रामायण का स्वाध्याय भी करना चाहिये। चिकित्सा व आहार विज्ञान का ज्ञान भी यथा सम्भव प्राप्त करना चाहिये और उसके अनुसार जीवन यापन करना चाहिये। यह ध्यान रखना चाहिये कि ताजा शाकाहारी भोजन स्वास्थ्यप्रद होता है तथा इसके विपरीत का भोजन, यथा सामिष, मांस, मदिरा, अण्डे, धूम्रपान का सेवन लाभप्रद नहीं होता, उससे हानि होती है।

इस प्रकार मनुष्य स्वस्थ, निरोग, सुखी, चिन्ताओं से मुक्त, स्फूर्तिदायक व साधन-सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सकता है। 25 वर्षों तक गुरूकुलीय व आधुनिक शिक्षा के संमिश्रित शैक्षिक संस्थान में अध्ययन कर प्रत्येक युवा को अपना पूर्ण बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति से वंचित रह जाते हैं वहीं दूसरी ओर देश भी उनकी प्रतिभा से वंचित हो जाता है। हम अनुमान करते हैं दुनिया के विकसित देशों में इस प्रकार की अवस्था व व्यवस्था नहीं होगी ? राष्ट्र के वर्तमान व भावी निर्माताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिये। हम अनुभव करते हैं कि यह पात्र निर्धन विद्यार्थियों को सभी प्रकार की शिक्षा की सुविधा का न मिलना ईश्वरीय नियमों के भी विरूद्ध है। हम अनुमान करते हैं कि वैदिक जीवन से पोषित व शिक्षित बुद्धिमान व्यक्ति को उपयुक्त रोजगार या व्यवसाय की कोई समस्या नहीं होनी चाहिये।

हमने पूर्व लिखा कि वैदिक जीवन में ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति का यथार्थ ज्ञान कराया जाता है जिसका कुछ दिग्दर्शन उपर्युक्त पंक्तियों में किया गया है। ईश्वर व आत्मा का ज्ञान प्राप्त व्यक्ति जो नियमित सन्ध्या व अग्निहोत्र करता है, आध्यात्मिक दृष्टि से, ज्ञान व अनुभव में, काफी उन्नत होगा। अशुभ व पाप कर्मों के परिणाम का उसको ज्ञान होने के कारण ऐसे कार्यों से वह सदा दूर रहेगा और यदि वह कभी दुविधाग्रस्त होता है तो उसका पूर्व अर्जित ज्ञान व अध्ययन उसे उन परिस्थितियों से पार करने का समाधान भी देगें। अत: आध्यात्मिकता का पूर्ण ज्ञान होने के कारण इसका समावेश उसके जीवन में होगा। यहां हमें लगता है प्रत्येक व्यक्ति का ज्ञान, अनुभव, स्वभाव, इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति व उसकी पूर्ति का जज्बा आदि बातें अलग-अलग होती हैं जिससे दो व्यक्तियों का व्यक्तित्व एक जैसा न होकर भिन्न-भिन्न होता है। वैदिक जीवन पद्धति का अनुसरण व आचरण अर्थात् व्रत पालन होने से समाज में आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वालों का अनुपात धीरे-धीरे बढ़ने लगेगा और बढ़ता जायेगा। इसका एक परिणाम यह हो सकता है कि हमें ज्ञानी, वैराग्यवान, साधु, संन्यासी, विवेकी, योगी, देशभक्त सज्जन, चरित्रवान लोग अधिक मिलेगें जिसका परिणाम समाज व देश के लिए शुभ होगा। हमारा स्पष्ट मत है कि वैदिक जीवन में ढला समाज वर्तमान के समाज से कहीं अधिक उपयोगी, समाज के लिए श्रेयस्कर व हितकर एवं समाज के सभी लोगों के लिए अधिक आदरणीय एवं स्वीकारणीय होगा। आवश्यकता है कि इस ओर संकल्प लेकर कार्य करने की। हमें लगता है कि उद्देश्य की पूर्ति के लिए यत्र-तत्र जो प्रयास किए जा रहे हैं उनमें गति आयेगी और भावी संसार वैदिक मूल्यों पर आधारित वैदिक जीवन में रचा-बसा समाज व विश्व होगा।

यहां मनुष्य जीवन में 16 वैदिक संस्कारों पर भी संक्षेप में चर्चा कर लेना उचित होगा। गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त जीवन को 16 संस्कारों में पिरोया गया है। यह संस्कार हमारी आत्मा को श्रेष्ठ संकल्प, प्रेरणा व शक्ति प्रदान करने के साथ उसे कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ करके उसकी सर्वांगीण उन्नति करते हैं। जिस प्रकार विवाह संस्कार होता है और उसमें वर व वधु की प्रतिज्ञायें होती हैं, ईश्वर को उपमान मानकर भौतिक अग्नि के सम्मुख यह संस्कार होता है, वह संसार भर के विवाह के कार्यक्रमों में अत्युत्तम है। विवाह भी गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार करने का विधान है। वैदिक रीति में जन्म-पत्री का मिलाना, जन्म जाति का आग्रह, वर्ण या आर्थिक स्थिति से कुछ लेना देना नहीं होता अपितु दोनों कुलों के सत्कर्मों व प्रतिष्ठा को देखा जाता है। ऐसे विवाह से जो सन्तान उत्पन्न होते हैं, चिकित्सकीय ज्ञान की दृष्टि से वह शारीरिक सुन्दरता-आकर्षण-सौष्ठव आदि में भी वह अन्यतम होते हैं। वैदिक विवाह संस्कार अति अल्प व्यय में भी, आर्य समाज मन्दिर में जाकर वहां के अधिकारियों व पुरोहितजी से प्रार्थना कर, कराया जा सकता है। यदि कहीं कोई अधिकारी गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित विवाह कार्य में बाधक बनते हैं तो वह अधिकारी होने के योग्य नहीं हैं। दहेज जैसी किसी प्रथा का कोई प्रचलन आर्य समाज में नहीं है। यदि कोई दहेज का लेन-देन करता है तो वह धर्म विरूद्ध कार्य है। अन्य मत-मतान्तरों की तुलना में वैदिक धर्म में मृत्यु होने पर मृतक शरीर का जो अन्तिम संस्कार होता है, वह वैज्ञानिक व अन्य सभी दृष्टियों से उत्तम होता है। अत्येष्टि संस्कार में घृत व सामग्री के प्रयोग से प्रदूषण नहीं होता, स्थायी रूप से शव को गाढ़ने के लिए भूमि की आवश्यकता नहीं पड़ती, शव को कीड़े आदि नहीं खाते जिससे वह दुर्गति से बच जाता है, भूमि जो शव गाढ़ने से अनुपयोगी हो जाती है उसका प्रयोग अधिक अन्न व साग सब्जियां उगा कर किया जा सकता है या अन्य प्रयोजन सिद्ध किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मात्र एक से डेढ़ धण्टे में परिवार के लोग संस्कार के कार्य से निवृत्त हो जाते हैं। इतनी विशेषताओं के होने पर भी जो बन्धु वैदिक जीवन पद्धति को नहीं अपनाते, वह अभागे ही कहे जा सकते हैं।

अन्त में हम तुलसीदास जी के दोहे-'दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, राम राज्य नहीं कोउ व्यापा।' को प्रस्तुत करते हैं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

संस्कृति एवं सुशासन के संरक्षक थे योगीराज श्री कृष्ण

श्री कृष्ण का जीवन योगी एवं तपस्वी का जीवन रहा है। प्रद्युम्न जो कि श्री कृष्ण एवं उनकी पत्नी रूक्मिणी की बारह साल की कठोर तपस्या का फल था, इस बात का स्पष्ट प्रमाण है। यह बात आर्य विदुषी प्रोफैसर सरला भारद्वाज ने आर्य समाज गौशाला रोड फगवाड़ा द्वारा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित 'हवन, भजन एवं प्रवचन' कार्यक्रम में सैंकड़ों प्रबुद्ध नगर वासियों को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण ने दुष्टों का नाश करने के लिए 'जैसे को तैसा' की नीति का आचरण भी किया। शिशुपाल का वध करते समय उन्होंने शिशुपाल को स्पष्ट चेतावनी दी कि उसकी निनयानवें गालियों तक तो वह उसे कुछ नहीं कहेंगे। यानि वह सक्षम होते हुए भी एक सीमा तक तो उसे माफ कर रहे थे। परन्तु सौवीं गाली के पश्चात् वह उसे माफ करने के लिए तैयार नहीं थे, और सचमुच उन्होंने भरी सभा में शिशुपाल द्वारा सीमा रेखा पार करते ही उसका वध कर दिया। सुदामा के साथ गुरूकुल के दिनों की अपनी बचपन की मित्रता निभाते समय उन्होंने गरीबी-अमीरी....रंक और राजा के फ़र्क का भी रत्ती भर ख़्याल नहीं किया। श्रीमती सरला भारद्वाज ने कहा कि श्री कृष्ण वेदों एवं उपनिषदों के ज्ञाता थे। युद्ध क्षेत्र में उन्होंने अर्जुन को जो गीता का उपदेश दिया, वह उपनिषदों का सार है। उन्होंने कहा कि गीता में कर्म, अकर्म और विकर्म की बहुत सुन्दर व्याख्या है, जिसे जानकर जीवन को सुन्दर और सफल बनाया जा सकता है।

इस अवसर पर श्री कृष्ण के जीवन पर भजन सुनाते हुए आर्य भजनोपदेशक अरूण वेदालंकार ने समय बांध दिया। मधुर सुरों से सजी वाणी में उन्होंने गाया-ये पर्व हमारी जाति को मज़बूत बनाया करते हैं, तो लोग वाह-वाह कर उठे।

उपस्थिति को सम्बोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि स्थानीय विधायक एवं मुख्य संसदीय सचिव श्री सोम प्रकाश ने कहा कि आर्य समाज को नशों, रिश्वतखोरी तथा भ्रूण हत्या जैसी बुराईयों का विरोध करने के लिए आगे आना चाहिए। इस पर आर्य समाज के प्रधान डा. कैलाश नाथ भारद्वाज ने कहा कि आर्य समाज इन बुराईयों से लड़ने के लिए श्री सोम प्रकाश से मिलकर उनके कन्धे से कन्धा मिलाकर अपनी भूमिका अवश्य निभाएगी।

कार्यक्रम के आरम्भ में हवन यज्ञ किया गया, जिसमें सर्व श्री रणजीत सोंधी उपप्रधान आर्य माडल सीनियर सैकंडरी स्कूल, रचना सोंधी, एडवोकेट रमण नारंग, एडवोकेट रघु नारंग, रोहित प्रभाकर एवं आशु पुरी अपनी धर्म पत्नियों सहित यजमान के रूप में सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर आर्य समाज सीनियर सैकंडरी स्कूल के मैनेजर सुरेन्द्र चोपड़ा, निदेशक हरिवंश मेहता, प्रिंसीपल नीलम पसरीचा, भाजपा मंडल प्रधान रमेश सचदेवा, डा. यश चोपड़ा, शिव हांडा, सतीश बग्गा, मलकीत सिंह रघबौत्रा, धर्मवीर नारंग, मनोहर लाल ग्रोवर, बलराज खोसला, डा. विश्व बंधु सुधीर, डा. रमेश सोबती, संजीब सभ्रवाल, सुशील वर्मा, सुशील कोहली, श्रीमती उर्मिला सूद, सरला चोपड़ा, सावित्री सरदाना, नीलम चोपड़ा, नैना खोसला, रेणु चोपड़ा, अनिल कोछड़ सहित सैंकड़ों विशिष्ट गणमान्य एवं स्कूल का स्टाफ सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के अन्त में पूरी छोले, आलू कचालु, खीर एवं चाय का ऋषि लंगर भी लगाया गया, जिसकी सभी ने बहुत प्रशंसा की। कार्यक्रम की सिटी केबल तथा दैनिक समाचार पत्रों में विस्तृत कवरेज भी हुई। **-डा. यश चोपड़ा**

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज ओहरी चौक बटाला जिला गुरदासपुर के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो वैदिक रीति के अनुसार सभी संस्कारों को करवाने की योग्यता रखता हो। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। **-प्रविन्द्र चौधरी प्रधान आर्य समाज मो-9888167678**

पृष्ठ 4 का शेष- वैदिक जीवन.....

इसमें लगता हैं कि क्योंकि राम राज्य का समय वैदिक युग में रहा है जहां वैदिक मान्यताओं का पूर्ण प्रचार-प्रसार व उसके आचरण व पावन की व्यवस्था थी। अत: उन दिनों व्यायाम, योगाभ्यास एवं शारीरिक श्रम करने व निरालस्य होकर पुरूषार्थयुक्त स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के कारण मनुष्य दैहिक दु:खों से दूर थे। दैहिक ताप या दु:ख का कारण अनुचित आहार भी होता है जो उन दिनों नहीं था। आयुर्वेद भी पूर्ण उन्नत था जिससे रोग आदि का उपचार सरलता से हो जाता था। वैद्यों में प्रलोभन की प्रवृति नहीं थी जैसी आजकल बन गई है। दैविक ताप अग्निहोत्र करने, पर्यावरण से छेड़छाड़ न करने से नियंत्रित रहते हैं, इसका भी उस काल में समुचित ध्यान रखने के कारण दैविक दु:ख प्राय: नहीं होते थे। भौतिक ताप जो हमें पशु, पक्षियों, कीट, पतंग या रोगाणुओं से होता है, वह भी इस कारण नहीं था कि हिंसक पशुओं के लिए पर्याप्त वन व निवास के स्थान व भोजनार्थ वनस्पतियां उपलब्ध थीं। सभी अग्निहोत्र करते थे जिससे रोगाणु या तो होते ही नहीं थे या बहुत कम जिससे उनका प्रभाव नगण्य होता था। फिर भी यदि कोई हिंसक पशु या प्राणी किसी मनुष्य को सताता था तो राजा व क्षत्रिय लोग उसका उचित प्रबन्ध करते थे। अत: हम समझते है कि तुलसीदास जी की बात में सत्यता है। वैदिक जीवन से इन तापों व दु:खों का समाधान व निदान किया जा सकता है।

अन्त में हम अनुभव करते हैं कि वैदिक जीवन वर्तमान युग में संसार भर में व्यतीत की जाने वाली नाना प्रकार की जीवन-पद्धतियों से बेहतर व सर्वोत्तम है। इसी वैदिक जीवन को सारी दुनियां के लोगों को अपनाना चाहियें और उसमें यदि कहीं कोई कमी पायी जाती है तो उसे विचार, चिन्तन व विज्ञान आदि की सहायता से दूर करना चाहिये। यदि हम विश्व शान्ति की बात करते हैं तो वैदिक जीवन का आचरण व निर्वाह ही इस उद्देश्य के सबसे अधिक अनुकूल है। इस वैदिक जीवन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमारा भावी जीवन सुधरता है। योगाभ्यास, वेदाध्ययन, स्वाध्याय, सन्ध्या, अग्निहोत्र आदि के आचरण द्वारा इस जीवन में मुक्ति वा मोक्ष की प्राप्ति का युक्तिसंगत व व्यवहारिक ज्ञान व इसके साधन भी उपलब्ध है। अन्य जीवन पद्धतियों में युवावस्था का जीवन तो सुखी हो सकता है परन्तु वृद्धावस्था व परजन्म सुखदायक होगा यह असिद्ध होने से वह घाटे का सौदा है।

स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। झंडा लहराने की रस्म माननीय श्री परवीन बांसल जी ने अदा की। कार्यक्रम की शुरूआत गायत्री मंत्र से की गई जिसे स्कूल की छात्राओं ने बड़े मनमोहक ढंग से पेश किया। गायत्री मंत्र के पश्चात स्कूल के प्रधान श्री संत कुमार आर्य ने सब को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी और देश के शहीदों को नमन किया और कहा कि कैसे बांके वीरों ने अपना सब कुछ देश के लिये न्यौछावर कर दिया और देशवासियों को अंग्रेजों की दास्तां से आजादी दिलवाई। इसके पश्चात माननीय बांसल जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बच्चों को बताया कि कैसे हमें आजादी मिली और इसके लिये हमें कौन-कौन सी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इस अवसर पर स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के सभी सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री विजय सरीन जी ने बच्चों को सम्बोधित करते हुये कहा कि हमें भी अपने देश के लिये मर मिटने का जज्बा अपने सीने में पालना चाहिये। उन्होंने बच्चों को आह्वान किया कि देश की तरक्की के लिये खूब मेहनत से पढ़-लिख कर अपने स्कूल और देश का नाम रोशन करना चाहिये। स्कूल प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने बड़े सुन्दर शब्दों में बच्चों को बताया कि देश की आजादी के लिये पुरुषों के साथ साथ महिलाएं भी अपना योगदान देने में पीछे नहीं रहीं और अपनी जन्म भूमि को स्वतंत्र कराने में अपने प्राण त्याग दिये। ऐसी वीरांगनाओं को शत-शत प्रणाम करना चाहिये। इसके पश्चात बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़े ही सुन्दर ढंग से पेश किया गया जिसमें बच्चों ने अलग-अलग तरह से डांस किये। इस अवसर पर श्री अजय बतरा जी ने अपनी तरफ से बच्चों को बिस्कुट भेंट किये। शांतिपाठ के पश्चात कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **-रेणु बहल**

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में कृष्ण जनमाष्टमी पर्व

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में 17 अगस्त रविवार प्रात: 8 से 10 बजे तक कृष्ण जनमाष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसे आर्य समाज के पुरोहित श्री बाल कृष्ण शास्त्री जी ने सम्पन्न कराया। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण नित्य यज्ञ करते थे और हम सबको भी यज्ञ करने का उपदेश दिया। अत: हम सब का कर्त्तव्य बनता है कि हम अपने घरों में यज्ञ करें। श्री कृष्ण ने धर्म की स्थापना के लिए जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। यज्ञ के उपरान्त मधुर भजन हुए। तदुपरान्त श्री श्रवण कुमार बत्रा ने योगीराज श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण ईश्वर का अवतार नहीं थे। वे आप्त पुरूष थे। उन्होंने मानव मात्र के कल्याण के लिए गीता का ज्ञान दिया। उन्होंने प्रत्येक कार्य को कुशलता से पूर्ण करने को योग कहा। सुख-दुख, लाभ-हानि में सम रहने को भी योग कहा। आर्य समाज के प्रधान श्री विजय सरीन जी ने कहा कि हमें महाभारत में वर्णित श्री कृष्ण के शुद्ध स्वरूप का गान कर उनके बताए मार्ग पर चलना चाहिए।

15 अगस्त सांय 4 से 6 बजे तक आर्य समाज मन्दिर में स्वतन्त्रता दिवस एवं तीज का पर्व मनाया गया। जिसमें यज्ञ किया गया। श्रीमती वीना गुलाटी, अनु गुप्ता, उषा गुलाटी, सरोज गम्भीर, मीरा सरीन, प्रमोद गुलाटी, कुमारी प्रतिभा, श्री अनिल कुमार व श्री विजय सरीन ने राष्ट्र भक्ति के गीत, लोक गीत और प्रभु भक्ति के भजन प्रस्तुत किए। सभी उपस्थित जनों ने संकल्प किया कि वह जो-जो कार्य करते हैं उसको ईमानदारी कुशलता से कर राष्ट्र के उत्थान में सहयोग देंगे।

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर में वेद सप्ताह धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज जालन्धर अड्डा होशियारपुर का वेद सप्ताह श्रावणी पर्व 4 अगस्त से 10 अगस्त तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री राजेश प्रेमी जी के मधुर भजन होते रहे। सोमवार से प्रात: 7:00 से 9:00 बजे तक हवन, भजन और प्रवचन तथा रात्रिकालीन सत्संग में 7 से 9 बजे तक भजन और वेद कथा होती रही।

10 अगस्त को मुख्य समारोह प्रात: हवन यज्ञ के साथ आरम्भ हुआ। स्वस्ति याग के मन्त्रों के साथ यज्ञ की पूर्णाहुति की गई। श्री सोहन लाल सेठ ने सपरिवार यजमान बनकर यज्ञ में आहुतियां ड़ालकर पुण्यार्जित किया। यज्ञ के पश्चात सप्ताह भर बनने वाले सभी यजमानों को विद्वानों के द्वारा आशीर्वाद तथा प्रसाद दिया गया। जलपान के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आरम्भ हुआ। श्री राजेश प्रेमी जी ने अपने सुन्दर भजनों के द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। भजनों के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री, श्री सुरेश कुमार शास्त्री,श्री वेद प्रकाश आर्य श्री आचार्य देवराज जी कपूरथला के प्रवचन हुए। आर्य समाज के मार्गदर्शक तथा सबके प्रेरणास्रोत श्री सोहन लाल सेठ ने सभी विद्वानों तथा आर्यजनों का धन्यवाद करते हुए कहा कि श्रावणी पर्व स्वाध्याय का पर्व है। उन्होंने स्वाध्याय के लाभ का वर्णन करते हुए कहा कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है, इन्द्रिय संयमी होता है, एकाग्रचित्त होता है, उसे किसी का भय नहीं होता तथा वह आलस्य प्रमाद का त्याग करके कर्म करता है। मंच का संचालन शिक्षा संस्था के प्रिंसिपल श्री श्रवण भारद्वाज ने किया। आर्य समाज के कर्मठ प्रधान श्री विनोद सेठ जी ने कार्य्रकम की सफलता के लिए खूब भाग-दौड़ की और कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। शांतिपाठ के पश्चात कार्यक्रम का समापन किया गया और तत्पश्चात सभी आर्यजनों ने लंगर ग्रहण किया। **-रमेश कालड़ा महामन्त्री आर्य समाज**

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में कृष्ण जनमाष्टमी का पर्व मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में 17 अगस्त 2014 को 8:00 से 10:30 बजे तक श्री कृष्ण जनमाष्टमी का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम हवन यज्ञ किया गया जिसे गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी शिवा ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ के पश्चात श्रीमती सोनू भारती ने कृष्ण के सम्बन्ध में बहुत सुन्दर प्रेरणादायक भजन सुनाया। तत्पश्चात आर्य समाज के मन्त्री श्री रणजीत आर्य जी ने सभी का स्वागत करते हुए बहुत सुन्दर श्री कृष्ण के सम्बन्ध में कविता सुनाकर उनके जीवन से प्रेरणा लेने की शिक्षा दी। श्री अश्विनी ड़ोगरा जी ने महान् क्रान्तिकारी मदन लाल ढ़ींगरा के जीवन पर प्रकाश डाला और वर्तमान में समाज में फैल रही बुराईयों की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। कृष्ण जनमाष्टमी के अवसर पर उन्होंने आह्वान करते हुए कहा कि हम सभी इन बुराई को दूर करने का संकल्प लें। तत्पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय से आए श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने श्री कृष्ण जी जीवन पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं से भरा हुआ है। महर्षि दयानन्द जी ने उन्हें सत्यार्थ प्रकाश में आप्त पुरूष कहा है जिसने जन्म से मृत्युपर्यन्त कोई भी कार्य नहीं किया है। उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण योगी, तपस्वी और संयमी थे। जिन्होंने अपने पुत्र प्रद्युम्न की प्राप्ति के लिए पत्नी के साथ 12 वर्ष के कठोर ब्रह्मचर्य व्रत को धारण किया था ऐसे संयमी और तपस्वी श्रीकृष्ण को आज भोगी, कामी और गोपियों के साथ नाचते हुए, रासलीला रचाते हुए दिखाया जाता है। उन्होंने कहा कि आज हम सभी जनमाष्टमी का पर्व तो बड़ी धूमधाम से मनाते हैं परन्तु हमने कभी भी श्री कृष्ण के शुद्ध स्वरूप को जानने का प्रयास नहीं किया जो महाभारत में वर्णित है। श्री कृष्ण जी वेद-वेदांगों के ज्ञाता थे, शूरवीर थे, नीतिवान थे तभी उन्हें युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सर्वप्रथम अर्घ्य प्रदान किया गया था। अत: हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम सभी श्री कृष्ण के शुद्ध स्वरूप को समाज में उजागर करें ताकि श्री कृष्ण के सम्बन्ध में जो भ्रान्तियां हैं, उन्हें दूर किया जा सके। अन्त में श्री रणजीत आर्य ने सभी का धन्यवाद किया और शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री ईश्वर चन्द्र रमपाल, अश्विनी ड़ोगरा, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, भूपेन्द्र उपाध्याय, राकेश मिश्रा, अर्चना मिश्रा, दीपक अग्रवाल, राकेश बावा, राजीव शर्मा, दिव्या आर्या, अनिल मिश्रा, अनु आर्य, संगीता मल्होत्रा, रमेश मुटरेजा, नरेश कुमार, सोनू, भारती, मनु आर्य, पूनम शर्मा, हर्ष लखनपाल सहित कई आर्य जन पधारे हुए थे। **-रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज**

चुनाव समाचार

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक अधिवेशन 17-08-2014 को सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री विजय सरीन जी सर्वसम्मति से पुन: प्रधान निर्वाचित हुए। अन्य अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य चुनने के लिए उनको सर्वसम्मति से अधिकार दिया गया। उन्होंने इस अधिकार का प्रयोग करते हुए निम्न पदाधिकारी तथा अन्तरंग सदस्यों का चयन किया:-1. प्रधान-श्री विजय सरीन 2. उपप्रधान- श्री राजेन्द्र बेरी व श्री बृजमोहन अरोड़ा 3. महामन्त्री- श्री अनिल कुमार 4. मन्त्री- श्री बृजेश पुरी 5. कोषाध्यक्ष- श्री राजीव गुप्ता 6. सह कोषाध्यक्ष- श्री अजय मोंगा 7. पुस्तकाध्यक्ष- श्रीमती वीना गुलाटी 8. अन्तरंग सदस्य-हरबंस लाल सहगल श्री ओम प्रकाश गुप्ता, श्रीमती अनु गुप्ता, श्रीमती मीरा सरीन 9.विशेष आमन्त्रित सदस्य-श्री श्री संजीव गुप्ता व श्रीमती श्वेता सेतिया 10. लेखानिरीक्षक- श्री कृष्ण चन्द झांझी। **-अनिल कुमार महामन्त्री**

आर्ष गुरुकुलों के छात्र छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए शीघ्र आवेदन भेजें

जो छात्र आर्ष ग्रन्थों के पढ़ने में रूचि रखते हैं, परन्तु आर्थिक कठिनाई अनुभव कर रहे हैं। वे मध्यमा या शास्त्री कक्षा के छात्र अपना प्रार्थना पत्र गुरुकुल के आचार्य से अनुमति पत्र के साथ मंत्री जी, परम मित्र मानवनिर्माण संस्थान रोहतक को संबोधित करते हुए निम्न पते पर शीघ्र भेजें। गुरुकुलों के आचार्यों से निवेदन है कि वे अपने एक योग्य छात्र का आवेदन शीघ्र भिजवाएं।

-स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना

श्रावणी उत्सव व श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाया

आर्य समाज, अबोहर के प्रांगण में दो पवित्र पर्व श्रद्धा व प्रेम सहित मनाए गए। शुरूआत सायंकाल को आर्य पुरोहित आशुतोष जी के पवित्र मन्त्र उच्चारण से हवन यज्ञ होता रहा। फिर उपस्थित सज्जन श्री प्रदीप कुमार, श्री प्रदीप गांधी, श्रीमती मनसा देवी, प्रेम सचदेवा द्वारा भजन सन्ध्या का आयोजन हुआ। श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव के समय उपस्थित आर्य पुरूष, मातृ शक्ति और बच्चों के साथ सुबह की पवित्र बेला में हवन यज्ञ सम्पन्न हुआ। डा० श्रीमती सरोज मिगलानी व आर्य पुरोहित आशुतोष जी ने भगवान श्री कृष्ण जी के जीवन के बारे में विचार पेश किए। आर्य स्कूल के विद्यार्थियों ने समधुर भजन पेश किए। पूरे सप्ताह भर इस भजन सन्ध्या का आनन्द नगर वासियों में खूब मनाया। अन्त में प्रधान श्री सोहन लाल सेतिया जी ने सभी को श्रावणी पर्व तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पूर्ण होने पर धन्यवाद दिया व सब को पर्व की बधाई भी दी।

आर्य समाज पटियाला में हुआ डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार का विशेष प्रवचन

आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज चौक, पटियाला में दिनांक 3 अगस्त 2014 को रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय) का विशेष प्रवचन हुआ, जिसमें उन्होंने व्यक्तित्व निर्माण पर जोर दिया। समाज में बढ़ते हुए जनरेशन गैप को बहुत हानिकारक बताया तथा इसके लिए माता-पिता जिम्मेदार हैं जो अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने में सक्षम नहीं हैं। माता-पिता व बड़ों को चाहिए कि वे स्वयं नियमित दिनचर्या का पालन करें, प्रतिदिन स्वाध्याय अवश्य करें तभी बच्चों को कुछ अच्छे संस्कार दे पाएंगे।

''सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म, स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्त्तव्य कर्म है।'' चरित्रवान माता-पिता ही राष्ट्र के लिए श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं। माता-पिता और शिक्षक को बच्चों की भावनाओं को समझने के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान भी अवश्य होना चाहिए।

उपदेश से पूर्व आचार्य बिजेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में विशेष साप्ताहिक यज्ञ किया गया जिसमें आर्य समाज के वरिष्ठ उप प्रधान श्री वीरेन्द्र सिंगला जी के सुपुत्र श्री अभय आर्य जिनका जन्मदिन था, मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर लगभग 150 लोगों ने यज्ञ एवं सत्संग से धर्म लाभ प्राप्त किया तथा अभय आर्य जी को पुष्प वर्षा से जन्मदिन की शुभकामनाएं व आशीर्वाद प्रदान किया। बहन सुप्रिया ने ईश्वर भक्ति का मधुर भजन गाया।

इस अवसर पर आचार्य एस. आर. प्रभाकर (डी. ए. वी. स्कूल), प्रधान यशपाल सिंगला (आर्य समाज समाना) व अनेक अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। प्रधान श्री राजकुमार सिंगला ने सभी का धन्यवाद किया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रचार मंत्री

दयानन्द पब्लिक स्कूल की गतिविधियां

2-8-14 शनिवार को पहली से पाँचवीं कक्षा तक की लेखन प्रतियोगिता करवाई गई। सब बच्चों ने बड़ी लगन एवं चाव से सुन्दर-सुन्दर लिखाई की। इसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले बच्चों को पारितोषिक दिए गए। साथ में कैमलिन पैंसिल वालों का भी कम्पीटिशन करवाया गया।

स्कूल में बड़े बच्चों के लिए तीज का त्योहार मनाया गया। इस अवसर पर सब बच्चे पारम्परिक परिधानों में बड़े ही मनमोहक लग रहे थे। सब लड़कियों ने पंजाबी सूट व बालों में परांदे पहन रखे थे। इस अवसर पर पंजाबी लोकगीत प्रतियोगिता, गिद्धा व भांगड़ा प्रस्तुत किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया और फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता में मिस पंजाबन का खिताब रिया व मेघा को दिया गया। स्कूल की प्रिंसीपल सुनीता मलिक ने बच्चों को कुदरत से प्रेम करने व पंजाब की विरासत का आनन्द मनाने को कहा कि हमें अपनी विरासत में मिली सांस्कृतिक सभ्यता को इसी प्रकार हर्षोल्लास से मनाते रहना चाहिए। **-सुनीता मलिक**

पुस्तक समीक्षा

1. पुस्तक : हुतात्मा भगतसिंह का जीवन-दर्शन। लेखक : धमेन्द्र जिज्ञासु। पृष्ठ संख्या : 266 प्रकाशक : आर्यवीर प्रकाशन, बल्लभगढ़। मूल्य: 180/- रुपए। प्राप्ति स्थान: धमेन्द्र जिज्ञासु, गांव सुनपेड़, डाकघर सागरपुर, तहसील बल्लभगढ़, ज़िला फरीदाबाद (हरियाणा)।

2. पुस्तक : शहीद-ए-आज़म भगतसिंह। लेखक : प्रताप सिंह शास्त्री एम. ए. तथा महीपाल आर्य, एम. ए.। पृष्ठ संख्या: 178 मूल्य: 100/- रूपए। प्रकाशक: प्रताप सिंह शास्त्री, 25, गोल्डन विहार, गंगवाह रोड, हिसार (हरियाणा)।

''शहीद-ए-आज़म भगतसिंह'' के अनुसार लाहौर हाई कोर्ट में चले मुकद्मे की कार्यवाही 1659 पृष्ठों पर मुख्यत: उर्दू में दर्ज है तथा अब यह देवनागरी लिपि में गुरुकुल कांगडी विश्व विद्यालय हरिद्वार में अब उपलब्ध है। इसी पुस्तक में लेखक ने भगत सिंह के वंश व गोत्र का विस्तृत परिचय दिया है। जबकि ''हुतात्मा भगत सिंह'' में भगत सिंह व उनके परिवार के आर्य समाज के प्रति सम्बद्धता का वर्णन करते हुए बहुत प्रमाण दिए हैं। बलिदानियों के इतिहास व राष्ट्रभक्ति में रूचि रखने वालों तथा नई पीढ़ी के युवकों हेतु ये दोनों पुस्तकें बहुत प्रेरक हैं।

दोनों पुस्तकों के कागज़ अच्छे हैं। भगत सिंह के विषय में प्रो. एम. ए. जुनेजा, हंस राज रहबर, जितेन्द्र सान्याल, डॉ० सी. डी. सान्याल, सत्यम वर्मा, प्रो. चमनलाल, मन्मथ नाथ गुप्त, निर्वंश सिंह, सुरेन्द्र श्रीवास्तव व यशपाल आदि ने बहुत लिखा है परन्तु भगत सिंह की भतीजी वीरेन्द्र सिन्धु के बाद सबसे अधिक तथ्यात्मक लेखन भगत सिंह विषयक इन पुस्तकों में ही हुआ है। **-इन्द्रजित देव**

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया

स्त्री आर्य समाज गुरुकुल विभाग गुरदासपुर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व आर्य समाज की प्रधान श्रीमती ज्योति नंदा की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सबसे पहले आर्य समाज के पुरोहित श्री राम निवास शास्त्री जी ने हवन यज्ञ करवाया और उसके पश्चात आर्य समाज की मंत्राणी श्रीमती सुदर्शना शर्मा जी ने श्रीकृष्ण के जीवन पर सविस्तार प्रकाश डाला। उप प्रधान श्रीमती प्रेम अम्बा ने बहुत सुन्दर भजनों से श्री कृष्ण जी का गुणगान किया। श्रीमती शिक्षा शर्मा और सुमन ढींगरा जी ने भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। अन्त में शास्त्री जी ने श्री कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अन्त में आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती ज्योति नंदा जी ने आए हुये सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर राधा गल्होत्रा कोषाध्यक्ष और उनके पति वीरेन्द्र जी, बहिन निर्मल जी, रेणु वोहरा जी, सुदर्शन शर्मा जी, सुमन नंदा जी, मीनाक्षी जोशी, शशि, अनीता, प्रेम अम्बा, मोनिका, रजनी आदि उपस्थित थी। कार्यक्रम के पश्चात जलपान का प्रबन्ध किया गया था। **-सुदर्शन शर्मा मंत्राणी**

वेदवाणी

हम इन्द्र के पौरोहित्य में वृत्र का नाश करें

इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः।
इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे।

-ऋक्० ८।१२।२२

विनय-देव लोग वृत्रवध के लिए इन्द्र के आगे करते हैं, इन्द्र को पुरोहित बनाते हैं। यह इन्द्र ही है जो वृत्रासुर का वध कर सकता है। जैसे आधि दैविक जगत् में सूर्य-इन्द्र मेघवृत्र का वध किया करता है, जैसे अधिभूत के देव विद्वान् लोग राजा इन्द्र द्वारा पापियों का विनाश करते हैं, वैसे यहां अध्यात्म में आत्मा इन्द्र है जो 'पाप्मा' वृत्र का हनन करता है। पाप हम पर दिन-रात आक्रमण करता रहता है और प्रायः सदा सफल होता रहता है। हम जानते हैं कि यह पाप है, यह नहीं करना चाहिए, तो भी हम रुक नहीं सकते। हम इन्द्रियों को रोकते हैं, मन से विचार करते हैं और बुद्धि से निश्चय करते हैं, पर फिर भी हम रूक नहीं सकते। इसका कारण यह है कि हम आत्मा द्वारा पाप का नाश नहीं करते हैं, हमने आत्मा को पीछे डाल रखा है। देखो, इन्द्रियों से परे मन है, मन से परे बुद्धि है और बुद्धि से भी परे जो है वह हमारा असली आत्मा है। यदि हम उस आत्मा को आगे ले आएं, पुरोहित कर लेवें, इन्द्रियादि देवों को इस आत्मा अनुयायी, वश्य, पीछे चलने वाला बना लें, तो फिर वृत्रासुर कभी दुबारा हमारे सामने न आ सके, इसका समूल नाश हो जाए। यह काम है, इच्छा है, स्वार्थ है जो सब पापों की जड़, मूल है, पर आत्म प्रकाश हो जाने पर इस स्वार्थ का हममें कुछ काम नहीं रहता, यह विलीन हो जाता है। आत्मराज्य हो जाने पर यह 'काम' इन्द्रियादिकों को अपना अधिष्ठान नहीं बना सकता। तब तो ये हमारे देव आत्मिक ओज के अधिष्ठान बन जाते हैं। वृत्र का अन्धकार हटकर हमारे अन्दर आत्म सूर्य का ओज चमकने लगता है और देखो, आत्मा के इस ओज को प्रकट करने के लिए ये वाणियाँ, वाणी की स्तुतियां बहुत सहायक होती हैं। जब हम सुनते हैं, स्वाध्याय करते हैं या स्वयं गाते हैं कि आत्मा की शक्ति इतनी महान् है तो इससे आत्मा का ओज हम इस दिव्य वाणी द्वारा आत्मिक ओज को अपने में सम्यक्तया प्रकट कर लें और उस द्वारा महाबली वृत्र का संहार कर दें, अतः आओ, भाईयो! हम भी इन्द्र को पुरोहित करके अपने में वृत्र का समूल नाश कर लें और इसके लिए अपने में आत्मिक ओज को स्तुति प्रार्थनाओं द्वारा सम्यक्तया भर लें।

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि छत्तीसगढ़ राज्य के महासमुन्द जिले के आर्ष ज्योति गुरुकुल आश्रम कोसरंगी परिसर में प्रान्तीय स्तर का एक बृहद् "वेद एवं वैदिक संस्कृति सम्मेलन" का आयोजन दिनांक 5, 6, 7 दिसम्बर 2014 को आयोजित किया जा रहा है जिसमें भारतवर्ष के कोने-कोने से सौ से अधिक वैदिक विद्वानों का आगमन हो रहा है। सम्मेलन में वेद के सूक्ष्मतम विषयों पर चिन्तन, चर्चा व संगोष्ठी होगी साथ ही सस्वर वैदिक पाठों से वातावरण सुवासित होगा। भारतवर्ष के उच्चकोटि के साधु-सन्यासी, विद्वान, आचार्य सहित समाज सेवी महानुभाव व महामहिम राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं मंत्रीगणों के पधारने की सम्भावना है।

अतः अभी से आप सभी को आयोजन का पावन निमन्त्रण भेज रहे हैं। आयोजन की भव्यता व महत्ता को सार्वजनिक करते हुए अनुरोध है कि इन तिथियों में किसी प्रकार का आयोजन अपने यहां न रखें। सम्मेलन में पधार कर अनुगृहित करें।

-आचार्य

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।